कथा सरिता

सबका है अपना-अपना....

भक्ति मार्ग की कथा है। एक बार लक्ष्मी और नारायण धरा पर घूमने आए, कुछ समय घूम कर वो विश्राम के लिए एक बगीचे में जाकर बैठ गए। नारायण आँख बंद कर लेट गए, लक्ष्मी जी बैठ नज़ारे देखने लगीं।

थोड़ी देर बाद उन्होंने देखा कि एक आदमी शराब के नशे में धुत गाना गाते जा रहा था। उस आदमी को अचानक ठोकर लगी तो उस पत्थर को लात मारने और अपशब्द कहने लगा। लक्ष्मी जी को बुरा लगा, अचानक उसकी ठोकरों से पत्थर हट गया, वहां से एक पोटली निकली। उसने उठा कर देखा तो उसमें हीरे जवाहरात भरे थे। वो खुशी से नाचने लगा और पोटली उठा चलता बना। लक्ष्मी जी हैरान हुईं, उन्होंने सोचा, ये इंसान बहुत झूठा, चोर और शराबी है। सारे ग़लत काम करता है। इसे भला ईश्वर ने कृपा के काबिल क्यों समझा! उन्होंने नारायण की तरफ देखा, मगर वो आँखें बंद किये मग्न थे।

तभी लक्ष्मी जी ने एक और व्यक्ति को आते देखा, बहुत गरीब लगता था। मगर उसके चेहरे पर तेज और ख़ुशी थी। कपड़े साफ़ मगर पुराने थे। तभी उस व्यक्ति के पांव में एक बहुत बड़ा शूल यानि कांटा घुस गया। ख़ून के फव्वारे बह निकले। उसने हिम्मत कर उस कांटे को निकाला, पांव में गमछा बांधा, प्रभु को हाथ जोड़ धन्यवाद दे लंगड़ाता हुआ चल दिया। इतने अच्छे व्यक्ति की ये दशा। उन्होंने पाया कि नारायण अब भी आँख बंद किये पड़े हैं मज़े से। उन्हें अपने भक्त के साथ ये भेदभाव पसंद नहीं आया। उन्होंने नारायण को हिलाकर उठाया, नारायण आँखें खोल मुस्काये। लक्ष्मी जी ने उस घटना का राज़ पूछा तो नारायण ने जवाब में कहा। लोग मेरी कार्यशैली नहीं समझे। मैं किसी को दु:ख या सुख नहीं देता, वो तो इंसान अपनी करनी से पाता है। यूं समझ लो, मैं एक अकाउंटेंट हूँ। सिर्फ ये हिसाब रखता हूँ कि किसको किस कर्म के लिए कब या किस जन्म में अपने पाप या पुण्य अनुसार क्या फल मिलेगा।

जिस अधर्मी को सोने की पोटली मिली, दरअसल आज उसे उस वक़्त पूर्व जन्म के सुकर्मों के लिए, पूरा राज्य-भाग्य मिलना था, मगर उसने इस जन्म में इतने विकर्म किये कि पूरे राज्य का मिलने वाला खज़ाना घट कर एक पोटली सोना रह गया। और उस भले व्यक्ति ने पूर्व जन्म में इतना पाप करके शरीर छोड़ा था कि आज उसे शूली यानि फाँसी पर चढ़ाया जाना था, मगर इस जन्म के पुण्य कर्मों की वजह से शूली एक शूल में बदल गई। अर्थात् ज्ञानी को कांटा चुभे तो उसे कष्ट होता है, दर्द तो होता है मगर वो दु:खी नहीं होता। दूसरों की तरह वो भगवान को नहीं कोसता, बल्कि हर तकलीफ को प्रभु इच्छा मान इसमें भी कोई भला होगा मानकर हर कष्ट सह कर भी प्रभु का धन्यवाद करता है। तो आगे से आप भी किसी तकलीफ में हों तो ज़रूर विचारिये। सिर्फ़ कष्ट में हैं या दु:खी हैं। सच्चे दिल से प्रभु पर विश्वास से आपकी आधी सज़ा माफ़ हो जाती है और बाकी तकलीफ सहने के लिए परमात्मा आपको उसे ख़ुशी ख़ुशी झेलने की हिम्मत और मार्गदर्शन देते हैं।

वही देगा जो ...है उनके पास

एक व्यक्ति ने एक नया मकान खरीदा। उसमें एक फलों का बगीचा भी था। उसके पड़ोस का घर पुराना था और उसमें कई लोग भी रहते थे। कुछ दिन बाद उसने देखा कि पड़ोस के घर से किसी ने बाल्टी भर कूड़ा, उसके घर के दरवाज़े के सामने डाल दिया है। शाम को उस व्यक्ति ने एक बाल्टी ली, उसमें अपने बगीचे के ताज़े फल रखे और फिर पड़ोसी के दरवाज़े की घंटी बजाई। उस घर के लोगों ने जब झांककर देखा तो बेचैन हो गये और वो सोचने लगे कि वह शायद उनसे सुबह की घटना के लिये लड़ने आया है। अत: वे पहले से ही तैयार हो गये और बुरा भला सोचने लगे।

मगर जैसे ही उन्होंने दरवाज़ा खोला, उन्होंने देखा - रसीले ताज़े फलों से भरी बाल्टी के साथ चेहरे पर मुस्कान लिए नया पड़ोसी सामने खड़ा था। अब सब हैरान-परेशान थे। उसने अंदर आने की इज़ाज़त मांग घुसते ही कहा, 'जो मेरे पास था, वही मैं आपके लिये ला सका।' वो परिवार अपने इस कृत्य पर शर्मिंदा था। यह सच भी है, इस जीवन में जिसके पास जो है, वही तो वह दूसरों को दे सकता है। आप भी ज़रा सोचना... आपके पास दूसरों को देने हेतु क्या है..।

जानें शब्द की ताकत

एक नौजवान चीता पहली बार शिकार करने निकला। अभी वो कुछ ही आगे बढ़ा था कि एक लकड़बग्घा उसे रोकते हुए बोला, 'अरे छोटू, कहाँ जा रहे हो तुम?' 'मैं तो आज पहली बार खुद से शिकार करने निकला हूँ। चीता रोमांचित होते हुए बोला।' हा-हा-हा लकड़बग्घा हँसा, 'अभी तो तुम्हारे खेलने-कूदने के दिन हैं, तुम इतने छोटे हो, तुम्हें शिकार करने का कोई अनुभव भी नहीं है, तुम क्या शिकार करोगे?' लकड़बग्घे की बात सुनकर चीता उदास हो गया, दिन भर शिकार के लिए वो बेमन इधर-उधर घूमता रहा, कुछ एक प्रयास भी किये पर सफलता नहीं मिली और उसे भूखे पेट ही घर लौटना पड़ा। अगली सुबह वो एक बार फिर शिकार के लिए निकला। कुछ दूर जाने पर उसे एक बूढ़े बन्दर ने देखा और पूछा, 'कहाँ जा रहे हो बेटा?' 'बंदरमामा, मैं शिकार पर जा रहा हूँ।' - चीता बोला। बन्दर बोला, 'बहुत अच्छे, 'तुम्हारी ताकत और गति के कारण तुम एक बेहद कुशल शिकारी बन सकते हो। जाओ तुम्हें जल्द ही सफलता मिलेगी।' यह सुन चीता उत्साह से भर गया और कुछ ही समय में उसने एक छोटे हिरण का शिकार कर लिया।

मित्रों, यदि हम भी जीवन में ऐसे ही आशावादी शब्दों का प्रयोग करें तो उसकी ताकत से हब सभी की आशायें अवश्य पूर्ण होंगी।

भदोही-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं जिलाधिकारी राजेन्द्र प्रसाद, विधायक रविन्द्र नाथ त्रिपाठी, मुख्य विकास अधिकारी हरि शंकर सिंह, उप-जिलाधिकारी तथा ब्र.कु. विजयलक्ष्मी।

अम्बाला कैंट-हरियाणा। भारतीय सेना अम्बाला कैंट मुख्यालय (2 कॉर्प्स हेडक्वार्टर) द्वारा योग दिवस पर गोल्फ कोर्स में आयोजित कार्यक्रम में राजयोग के बारे में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शैली। सभा में मेजर जनरल के.एस. निज्जर,स्टाफ हेडक्वार्टर 2 कॉर्प्स के चीफ, मेजर जनरल संजीव चौधरी,जी.ओ.सी.,पी.एच.,एच.पी., सब एरिया मेजर जनरल दीपक ओभरै,जी.ओ.सी.40आर्टिलरी डिविज़न, अन्य आफिसर्स, जवान तथा उनका परिवार।

ब्रह्मापुर-पी.यू.आर.सी.(ओडिशा)। ब्रह्माकुमारीज़ एवं मेडिकल कॉलेज के स्त्री रोग विभाग द्वारा 'अद्भुत मातृत्व' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं अद्भुत मातृत्व की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. डॉ. शुभदा नील, ब्र.कु. मंजू, स्त्री रोग विभाग की मुख्य डॉ. भारती मिश्र, स्त्री रोग विभाग की सम्पादक डॉ. इन्द्रा पाल, प्रसूति शास्त्री डॉ. संधाश्री पांडा, ब्र.कु. प्रो. ई.वी. गिरीश, ब्र.कु. डॉ. दामिनी मेहता तथा अन्य अतिथिगण।

सियावा-राज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सियावा में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में विद्यालय के प्रधानाचार्य नरेन्द्र सिंह भाटी, योगाचार्य ब्र.कु. बोबिन्द्र सिंह, पी.टी.आई. टीचर प्रदीप सिंह गुर्जर तथा सरपंच महोदया श्रीमती नोनी देवी।

अपरा-फिल्लौर(पंजाब)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर बी.एम.सी. पार्क में योग के पश्चात् समूह चित्र में प्रधान पुरूषोत्तम विठ्ठल, रोपण घई सराफ, ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य।

झालरापाटन-राज.। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर गोमती सागर चौपाटी में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए अग्रवाल सामाज के अध्यक्ष राजेन्द्र गोयल, ब्रजेश गुप्ता, योग गुरू योगेन्द्र बंटी, ब्रजेश सेन, श्रीनाथ घाटिया, एडवोकेट नरेन्द्र, राजेश जी तथा ब्र.कु. मीना।

तोशाम-हरियाणा। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर आयुष विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में योग का महत्व बताते हुए ब्र.कु. सुनीता।